**विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय**

**कक्षा – षष्ठ** **दिनांक -23-10-2020**

**विषय -हिन्दी** **विषय शिक्षक -पंकज कुमार**

**एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित**

सुप्रभात बच्चों आज सी, सी,ए,के अन्तर्गत दुर्गा पूजा पर एक कहानी दुर्गा पूजा के महत्व के बारे में अध्ययन करेंगे।

**दुर्गा पूजा की कहानी :**

**यह माना जाता है कि एक बार महिषासुर नामक एक राजा था। महिषासुर ने स्वर्ग में देवताओं पर आक्रमण किया था। महिषासुर बहुत ही शक्तिशाली था जिसके कारण उसे कोई भी हरा नहीं सकता था। उस समय ब्रह्मा , विष्णु और शिव भगवान के द्वारा एक आंतरिक शक्ति का निर्माण किया गया जिनका नाम दुर्गा रखा गया था।**

**देवी दुर्गा को महिषासुर का विनाश करने के लिए आंतरिक शक्ति प्रदान की गई थी। देवी दुर्गा ने महिषासुर के साथ पूरे नौ दिन युद्ध किया था और अंत में दसवें दिन महिषासुर को मार डाला था। दसवें दिन को दशहरा या विजयदशमी के रूप में कहा जाता है। रामायण के अनुसार भगवान श्री राम ने रावण को मारने के लिए देवी दुर्गा से आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए चंडी पूजा की थी।**

**श्री राम ने दुर्गा पूजा के दसवें दिन रावण को मारा था और तभी से उस दिन को विजयदशमी कहा जाता है। इसीलिए देवी दुर्गा की पूजा हमेशा अच्छाई की बुराई पर विजय का प्रतीक है। एक बार देवदत्त के पुत्र कौस्ता ने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद अपने गुरु वरतन्तु को गुरु दक्षिणा देने का निश्चय किया हालाँकि उसे 14 करोड़ स्वर्ण मुद्राओं का भुगतान करने के लिए कहा गया था।**

कौस्ता इन्हें प्राप्त करने के लिए राम के पूर्वज रघुराज के पास गया हालाँकि वो विश्वजीत के त्याग के कारण यह देने में असमर्थ थे। इसलिए कौस्ता इंद्र देव के पास गए और इसके बाद वे कुबेर के पास आवश्यक स्वर्ण मुद्राओं की अयोध्या में शानु और अपति पेड़ों पर बारिश कराने के लिए गए।

इस तरह से कौस्ता को अपने गुरु को गुरु दक्षिणा देने के लिए मुद्राएँ प्राप्त हुई थीं। उस घटना को आज के समय में अपति पेड़ की पत्तियों को लूटने की एक परंपरा के माध्यम से याद किया जाता है। इस दिन लोग इन पत्तियों को एक दूसरे को सोने के सिक्के के रूप में देते हैं।

दुर्गा पूजा का महत्व

: भारत को मातृभक्त देश कहा जाता है। हम भारत को ही श्रद्धा से भारत माता कहते हैं। भारत देश में देवताओं से ज्यादा देवियों को अधिक महत्व दिया जाता है। सभी देवी देवताओं में माँ दुर्गा को सबसे ऊँचा माना जाता है क्योंकि उन्ही से विश्व को सभी प्रकार की शक्तियाँ मिलती हैं। इसीलिए दुर्गा पूजा का महत्व भी अन्य पूजा-पाठ से बढकर माना जाता है। नवरात्रि या दुर्गा पूजा के त्यौहार का बहुत अधिक महत्व होता है।

नवरात्रि का अर्थ नौ रात होता है। दसवें दिन को विजयदशमी या दशहरे के नाम से जाना जाता है। दुर्गा पूजा एक नौ दिनों तक चलने वाला त्यौहार है। दुर्गा पूजा के दिनों को स्थान , परंपरा , लोगों की क्षमता और लोगों के विश्वास के अनुसार मनाया जाता है। बहुत से लोग इस त्यौहार को पांच , सात या पूरे नौ दिनों तक मनाते हैं।

लोग दुर्गा देवी की प्रतिमा की पूजा षष्टी से शुरू करते हैं और दशमी को खत्म करते हैं। समाज या समुदाय में कुछ लोग दुर्गा पूजा को पास के क्षेत्रों में पंडाल को सजा कर भी मनाते हैं। इस दिन आस-पास के सभी मन्दिर विशेष तौर पर सुबह के समय पूर्ण रूप से भक्तिमय हो जाते हैं। बहुत से लोग इस दिन घरों में भी सुव्यवस्थित ढंग से पूजा करते हैं और आखिरी दिन प्रतिमा के विसर्जन के लिए भी जाते हैं।

**लोगों द्वारा देवी दुर्गा की पूजा ताकत और आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए की जाती है। देवी दुर्गा अपने भक्तों को नकारात्मक उर्जा और नकारात्मक विचारों को हटाने के साथ ही शांतिपूर्ण जीवन देने में मदद करती हैं। इसे भगवान राम की बुराई पर अच्छाई की जीत के रूप में भी मनाया जाता है। लोग इस दिन को रात के समय रावण के बड़े पुतले को जलाकर और पटाखे जलाकर मनाते हैं।**